चतुर्थो वर्गः

8. 'किरातार्जुनीयम्' इति काव्यस्य काव्यवैशिष्टयं बिलिख्यताम् - 7½

9. 'वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते' इति विषयमवलम्ब्य निबन्धो लिख्यताम् । 7½

A-171

बी. ए. (प्रथम वर्ष) परीक्षा, 2015

संस्कृतम्

द्वितीय प्रश्नपत्रम्

(व्याकरणं अनुवादः संस्कृत साहित्येतिहाश्च)

समयावधिः : घण्टात्रयम् पूर्णाङ्काः : 50

निर्देश : पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। प्रथम : प्रश्नोऽनिवार्यः। प्रतिवर्गम् एकैकस्य प्रश्नोत्तरं देयम्।

1. लघूत्तराणि विलिख्यन्ताम् - 2×10=20

(क) अनुनासिकसंज्ञा

(ख) प्रगृह्यसंज्ञा

(ग) अनुदात्तसंज्ञा

(घ) हलन्त्यम्

(ङ) प्रत्याहारः

(च) तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्

(छ) महाभारतम्

(ज) बुद्धचरितम्

(झ) संयोगसंज्ञा

(ञ) कुमारसम्भवम्

प्रथमो वर्गः

2. अधोलिखितानां सूत्राणां सोदाहरणं व्याख्या विधेयाः 7½

(क) अदर्शनं लोपः

(ख) उच्चैरूदात्तः

(ग) स्थानेऽन्तरतमः

(घ) एचोऽयवायावः

3. अधोलिखितानां पदानां सूत्रनिर्देशपूर्वकं सन्धिविच्छेदः क्रियताम् -7½

(क) गङ्गौघः

(ख) देवेशः

(ग) दैत्यारिः

(घ) विष्णोऽव

द्वितीयो वर्ग :

4. अधोलिखितानां सूत्राणां सोदाहरणं व्याख्या विधेया - 7½

(क) स्तोः श्चुना श्चुः

(ख) रवरि च

(ग) विसर्जनीयस्य सः

(घ) तोर्लि

5. अधोलिखितानां पदानां सूत्रनिर्देशपूर्वकं सन्धिविच्छेदः क्रियताम् -7½

(क) वागीशः

(ख) पुना रमते

(ग) शिवोऽर्च्यः

(घ) हरिं वन्दे

तृतीयो वर्ग :

6. संस्कृतभाषायाम् अनुवादः क्रियताम्- 7½

श्रीमद्भगवद्गीता का मूल विषय कर्म की विवेचना है। इस विवेचना का लक्ष्य कर्म को अकर्म बनाना है। कर्मयोग का तात्पर्य यह है कि कर्म करते हुये योग में स्थित रहना और योग करते हुये कर्म में स्थित रहना कर्ता के भाव से कर्म का स्वरूप बदल जाता है। कर्म और अकर्म का मूल कर्तापन है। कर्मशून्यता के अर्थ में अकर्म इस जगत् में कहीं भी नहीं रह सकता। कोई भी मनुष्य कभी कर्मशून्य नहीं हो सकता। श्रद्धा से फलाशा न रखकर कर्त्तव्य कर्म करने वाले धीर, उत्तम दृष्टि वाले दर्शनीय हैं। गीता समग्र विश्व में ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है, जो मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष प्रत्येक तथ्य की समुचित व्याख्या करने में समर्थ है।

7. संस्कृतभाषायाम् अनुवादः क्रियताम् - 7½

भारतवर्ष एक सांस्कृतिक देश है। क्षेत्र, वर्ग, भाषा और सभ्यता के अनेक रूपों वाले भारत का सांस्कृतिक जीवन एक है। विश्वव्यापी समस्याओं के समाधान की दिशा में भारतवर्ष आशाभरित किरण है। सत्य सनातन भारतीय संस्कृति का मूल उत्स संस्कृत भाषा है। संस्कृत की ज्ञान-गंगा श्रवण, मनन, सर्जन परम्परा से आज भी अक्षुण्ण है। रामायण, महाभारत तो भारतीय राष्ट्रीय चेतना के साक्षात् ऐतिहासिक प्रमाण है। संस्कृत वाङ्मय में राष्ट्रीय चेतना की यह धारा आधुनिक संस्कृत साहित्य में भी अबाधगति से प्रवहमान है।